वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.-155
ISBN 978-93-80353-13-5

विश्वशांति चालीसा

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से मनाए जा रहे ''शांति वर्ष-2009'' के अन्तर्गत पूज्य माताजी की 76वीं जन्मजयंती-शरदपूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाशित

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

द्वितीय संस्करण	आश्विन शु. पूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रतियाँ	वीर नि. सं. 2535	10/-रु.
	4 अक्टूबर 2009	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-सन् 2009, प्रतियाँ-2200

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष है कि 21 दिसम्बर 2008 को जब से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी ने ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' का उद्घाटन किया है, तब से देशभर से नित्य ही विश्वशांति अनुष्ठान, शांति मंत्र, शांति भक्ति, भक्तामर पाठ आदि धार्मिक आयोजनों के समाचार प्राप्त हो रहे हैं तथा स्कूल, कॉलेज आदि में ''विश्वशांति में अहिंसा का योगदान'' आदि विषयों पर संगोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता आदि शैक्षणिक कार्यक्रमों के आयोजन भी सम्पन्न हो रहे हैं, जिन्हें समय-समय पर सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका एवं आस्था चैनल के माध्यम से प्रचारित भी किया जा रहा है।

पूज्य माताजी का प्रत्येक कार्य सम-सामयिक होता है। आज विश्व में बढ़ती हिंसा से त्रस्त मानव

जीवन में शांति की महती आवश्यकता को देखते हुए उनका यह प्रयास विशेषरूप से सराहनीय है। इस सम्मेलन के उद्घाटन के पश्चात् से मनाए जा रहे ''शांति वर्ष-2009'' के अन्तर्गत कई छोटी-बड़ी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है, इसी श्रृँखला में इस ''विश्वशांति चालीसा'' नामक पुस्तक में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित विश्वशांति चालीसा एवं विश्वशांति से संबंधित कई भजन प्रकाशित हैं।

इस चालीसा का प्रतिदिन पाठ करने से घर-परिवार, समाज, देश और विश्व में शांति होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। आप भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से विश्वशांति मंत्र आदि अनुष्ठान करके विश्वशांति स्थापित करने में अपना सहयोग प्रदान करें तथा पुण्य एवं यश के भागी अवश्य बनें।

दो शब्द

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

इस संसार में जितने भी प्राणी निवास करते हैं, वे सभी सुख चाहते हैं और दुःख से डरते हैं तभी तो पं. दौलतराम जी ने छहढाला में लिखा है –

जे त्रिभुवन में जीव अनंत, सुख चाहें दुःख ते भयवंत।।

मजेदार बात यह है कि कोई तो अच्छा भोजन करके सुख महसूस करते हैं, कोई सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण पहनकर सुख का अनुभव करते हैं, कोई आज्ञाकारी पत्नी-पुत्र आदि में सुख की कल्पना करते हैं परन्तु आचार्य कहते हैं कि हे भव्यजीव! ये तो क्षणिक सुख है, शाश्वत सुख तो आत्मा का सुख है, इस दुर्लभ मनुष्य पर्याय को प्राप्त करके सभी प्राणियों को आत्म सुख के लिए ही पुरुषार्थ करना चाहिए।

आज हम वर्तमान में बढ़ते आतंकवाद, बढ़ती हिंसा को रोक तो नहीं सकते हैं परन्तु अनेक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान आदि के द्वारा वातावरण को पवित्र-शांत करके विश्वशांति की मंगलकामना अवश्य कर सकते हैं। इसी भावना से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 21 दिसम्बर 2008 को भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' का

उद्घाटन किया, उसके बाद से इस वर्ष 2009 को पूज्य माताजी ने ''शांति वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा प्रदान की है।

प्रसन्नता की बात यह है कि पूज्य माताजी की प्रेरणा पाते ही देशभर में हजारों भक्तगण अनेक प्रकार के मंत्र-जाप्य-अनुष्ठान आदि करके विश्वशांति की मंगलकामना के साथ-साथ महान पुण्य का अर्जन भी कर रहे हैं।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने ''विश्वशांति चालीसा'' की रचना करके उसमें बहुत ही सुन्दर व सरल शब्दों में बताया है कि किस प्रकार हम छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा घर, परिवार, समाज, देश में शांति स्थापित करने के साथ-साथ मैत्री, आपसी सौहार्द, सदाचार आदि के द्वारा विश्व की शांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं।

इस ''विश्वशांति चालीसा'' का आप प्रतिदिन कम से कम एक बार अवश्य पाठ करें तथा चालीस दिन तक चालीस-चालीस बार इस चालीसा को पढ़कर विश्वशांति हेतु मंगलकामना भी करें तथा पुस्तक में प्रकाशित ''शांति वर्ष-2009'' की प्रस्तावित रूपरेखा को पढ़कर अपनी समाज में भी कुछ न कुछ कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें एवं पुस्तक में प्रकाशित काव्य रूपक ''आज के मानव में कलियुग का रूप दिखाई देता है'' को तैयार करवाकर समय-समय पर उसका मंचन कराएँ।

इस प्रकार विभिन्न आयोजनों को करके इस शांति वर्ष को सार्थक बनाएँ, यही आप सबका परम कर्तव्य है।

राष्ट्रगौरव, परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद

(उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा – हाईस्कूल

गुरुसंघ में आगमन – सन् 1969

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत – सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. ग्यारस को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''षट्खण्डागम की संस्कृत टीका एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, आरती, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए भगवान जिनेन्द्र से यह प्रार्थना है कि पूज्य माताजी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें तथा उनकी रत्नत्रय साधना निराबाध चलती रहे, ताकि भूले-भटके संसारी प्राणियों को सम्यक्बोध की प्राप्ति होती रहे।

विश्वशांति चालीसा

—दोहा—

शांतिनाथ को नमन कर, चाहूँ आतम शांति।
सर्व उपद्रव शमन कर, पाऊँ सुख अरु शांति।।1।।
विश्वशांति के हेतु मैं, करूँ मंत्र का जाप।
चालीसा के पाठ से, होवें सब निष्पाप।।2।।
पाप बहुल इस सृष्टि में, हो सतयुग का वास।
मैत्री फैले विश्व में, आपस में सौहार्द।।3।।

—चौपाई—

हो जयवंत भरत का भारत, आर्यावर्त कहा जो शाश्वत।।1।।
जन्मे जहाँ सभी तीर्थंकर, पूज्य धरा वह सर्व हितंकर।।2।।
इस धरती का कण कण पावन, सारे तीर्थ यहीं मन भावन।।3।।
यहाँ धर्म गंगा बहती है, जनता सभी सुखी रहती है।।4।।
सन्त तपस्या में रत रहते, ज्ञानप्रभा युत प्रवचन करते।।5।।
भारत देश तभी तो जग में, धर्मगुरू कहलाया सच में।।6।।
उनके तप का अतिशय भारी, वे ही वरते हैं शिवनारी।।7।।
कहा जैन रामायण में यह, सन्त करें तप त्याग जहाँ पर।।8।।

उस धरती के शासक को भी, मिले पुण्य का छठा अंश भी।।9।।
यह विशेषता है भारत की, धर्मनीति अरु राजनीति की।।10।।
धर्मगुरू यहाँ पूजे जाते, शासक उनसे शक्ती पाते।।11।।
भक्त यहाँ मंदिर बनवाते, प्रभु को मंदिर में पधराते।।12।।
गूंजे जहाँ सदा पूजा स्वर, मंगलगान करें सब घर-घर।।13।।
सभी चाहते जीवन सुखमय, कभी न आवे दुःखों का भय।।14।।
दुख से डरता है हर प्राणी, फिर भी दुख पाते अज्ञानी।।15।।
इसमें कारण एक यही है, पुण्य भावनाएँ न रही हैं।।16।।
पुण्य का फल सुख सभी चाहते किन्तु पुण्य करना न चाहते।।17।।
पाप का फल दुख नहीं चाहते, किन्तु लिप्त हों पाप कार्य में।।18।।
ये अनादि संस्कार हैं जग में, जिससे प्राणी दुखी है सच में।।19।।
पर की उन्नति देख न पाता, अपनी ईर्ष्या रोक न पाता।।20।।
गुण में दोष तभी दिखता है, अपना दोष भी गुण दिखता है।।21।।
इन भावों से सुख नहिं मिलता, आत्मज्ञान का कमल न खिलता।।22।।
आत्मशांति तो भंग हुई है, दुःख अशांति की वृद्धि हुई है।।23।।
देश जाति भाषा के नाम पर, होते हैं संघर्ष परस्पर।।24।।
हिंसा अरु आतंक बढ़े हैं, बम विस्फोटक तत्व बढ़े हैं।।25।।
इनसे शांति मिलेगी कैसे, प्रेम की कली खिलेगी कैसे।।26।।

विश्वशांति के अनुष्ठान हों, जिससे जन-जन का कल्याण हो।।27।।
एक बात जानो नर नारी, हस्तिनापुर है नगरी प्यारी।।28।।
जम्बूद्वीप बना जहाँ सुन्दर, ज्ञानमती माता की धरोहर।।29।।
राष्ट्रपति जी जहाँ पधारीं, जनता ने किया स्वागत भारी।।30।।
विश्वशांति की ज्योति जलाई, सम्मेलन की धूम मचाई।।31।।
उच्चकोटि विद्वान् पधारे, धर्म अहिंसा गूंजे नारे।।32।।
पुनः ज्ञानमति माताजी ने, कहा मनाओ शांतिवर्ष ये।।33।।
विश्वशांति का मंत्र जपो सब, वातावरण पवित्र करो सब।।34।।
इससे सबकी रक्षा होगी, परिवारों की सुरक्षा होगी।।35।।
राज्य राष्ट्र में हो सुभिक्षता, मिट जावे धरती से हिंसा।।36।।
बाल वृद्ध हों युवा या नारी, शांतिविधान करें सब भारी।।37।।
दो हजार नौ शांति वर्ष में, राजा और जनता के स्वर ने।।38।।
एक साथ जब बिगुल बजाया, सबमें अति आनंद समाया।।39।।
जय हो विश्वधर्म की जय हो, धर्म अहिंसा सदा विजय हो।।40।।

—शंभु छंद—

यह विश्वशांति का चालीसा, जग की अशांति को दूर करे।
सबके मन परिवर्तित करके, अध्यात्म भाव को पूर्ण भरे।।
''चंदनामती'' सुख शांति चमन का, उपवन पुष्पित सदा रहे।
भारत के संग सब देशों की, मैत्री युत गंगा सदा बहे।।

भजन

तर्ज-मेला मइय्या दा.....

अहिंसा की जय हो-2, सत्यमेव जयते।
अहिंसा ही सबको-2, शांति और सुख दे।।टेक.।।
सारे जग में शांति और सुख इसके ही बल पर हो,
अहिंसा की जय हो-2।।टेक.।।

जब-जब धरती पर अन्याय तथा हिंसा भड़की है।
तब-तब सन्त महापुरुषों से धन्य हुई धरती है।।
इसीलिए सर्वदा न्याय की होती रही विजय है,
अहिंसा की जय हो....।।1।।

इन्सानों में ही हैवान का रूप छिपा रहता है।
उनमें ही भगवान का सच्चा रूप कभी दिखता है।।
जिओ और जीने दो यह ''चंदनामती'' सुखप्रद हो,
अहिंसा की जय हो।।2।।

भजन

तर्ज-काली तेरी.....

अहिंसा प्रधान मेरी इण्डिया महान है।
इण्डिया में जन्मे महावीर और राम है।।
यहाँ की पवित्र माटी बनी चन्दन,
उसे करो सब नमन।।

जहाँ कभी बहती थीं दूध की नदियाँ।
वहाँ अब करुणा की माँग करे दुनिया।।
अत्याचार पशुओं पे होगा कब खतम,
उसे करो सब नमन।।1।।

प्रभु महावीर का अमर संदेश है।
लिव एण्ड लेट लिव का दिया उपदेश है।।
मानवों की मानवता की यही पहचान है।
जाने जो पराए को भी निज के समान है।।
तभी अहिंसा का होगा सच्चा पालन,
उसे करो सब नमन।।2।।

अहिंसा के द्वारा ही इण्डिया फ्री हुई।
ब्रिटिश गवर्नमेंट की जब इति श्री हुई।।
चाहे हों पुराण या कुरान सभी कहते,
अहिंसा के पावन सूत्र सब में रहते।
यही मेरे देश की कहानी है पुरानी,
अहिंसक देश प्रेमियों की ये निशानी,
'चंदनामती' यह देश ऋषियों का चमन।
उसे करो सब नमन।।3।।

विश्वशांति मंत्र

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय
श्री शांतिनाथाय नमः।

भजन

तर्ज-दिल लूटने वाले.....

हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।
हे धर्म अहिंसा के नेता, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।टेक.।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।
दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुख दूर कर सकूँ कभी स्वयं।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।1।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्वों ने भ्रष्ट किया।।
ऐसी शक्ति हो प्रगट सभी में, विश्वशांति से करूँ चमन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।2।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इंसान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।।
है भाव यही 'चंदनामती', खिल जावे भारत का उपवन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।3।।

भजन

तर्ज - ज्ञानमती नाम मेरे जीवन का सहारा है.....

जग की शांति हेतु, केवल धर्म ही सहारा है।
केवल धर्म ही सहारा है, यही सन्तों का इशारा है।।
शांतिनाथ मण्डल विधान का, है प्रभाव अतिशयकारी।
शांतिमंत्र के अनुष्ठान का, है प्रचार सबमें भारी।।
दुख संकट हरने वाला भक्तों का यही सहारा है।।जग की.।।1।।

मंत्र जाप्य से चक्रवर्ति को, देव भी मार न पाया था।
मंत्र छोड़ते ही उस नृप को, देव ने मार गिराया था।।
रणभूमि में कवच के सदृश, मंत्र जाप्य ही प्यारा है।।जग की.।।2।।

मैत्री करुणा और अहिंसा, यही धर्म कहलाता है।
इसके बल पर देश का गौरव, और अधिक बढ़ जाता है।।
जिओ और जीने दो सबको, यही हमारा नारा है।।जग की.।।3।।

प्रभु पूजन अरु शांति मंत्र के, शब्द जहाँ तक गूँजेंगे।
वहाँ ''चंदनामती'' सभी सुख-चैन से प्राणी घूमेंगे।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने दिया यही बस नारा है।।जग की.।।4।।

भजन

तर्ज-झिलमिल सितारों का आंगन होगा.....

प्रभु! मेरा मन कब पावन होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।
गुरु वाणी को सुनकर तन-मन पावन होगा।। प्रभु!मेरा.।।

कभी सताया निर्बल प्राणी, हिंसा में आनंद लिया।
कभी झूठ चोरी के कारण, अशुभ कर्म का बंध किया।।
सोचा न इसका क्या फल होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।।1।।

कभी पशू बनकर मैंने भी, दुःख असंख्य उठाये हैं।
कभी नरक में जाकर कर्मों, के फल मैंने पाये हैं।।
पाप कर्म का यही फल होगा,पाप रहित कब यह मन होगा।।2।।

पुण्ययोग से नर तन पाकर, तीरथ व्रत अरु भजन किया।
दीन दुखी की सेवा करके, निज मन को सन्तुष्ट किया।।
इनसे ही सुरगति पावन होगाप़ाप रहित कब यह मन होगा।।3।।

नर तन से चारों गतियों का, मार्ग प्राप्त हो सकता है।
नर ही तो 'चंदनामती', नारायण भी बन सकता है।।
करना निजातम चिन्तन होगा,पाप रहित कब यह मन होगा।।4।।

भजन

तर्ज - ऐसी शक्ति हमें.....

ऐसी शक्ति मिले हमको भगवन्! पाप से दूर जब रह सकें हम।
हम चलें मुक्तिपथ के पथिक बन,
पथ से भटकें न प्रभुवर कभी हम।।ऐसी.।।

मन में आए अहं यदि कभी भी, उससे पहले विनय गुण प्रगट हो।
पर को दुख देने से पूर्व निज में, उसकी अनुभूति कर मन सजग हो।
सबके प्रति सुख व हित भावनाएँ,
मन में आएँ मेरे नाथ हर दम।।ऐसी.।।1।।

मोह ममता में हमने अनादी, काल से अपना जीवन बिताया।
सात व्यसनों में यदि फंस गया तोनरक पशुगति में जा दुख उठाया।।
रोते रोते वहाँ काल बीता,
पुण्य से पाया फिर मैंने नर तन।।ऐसी.।।2।।

हमको करना है अब प्रभु की भक्ती, और गुरुओं की सत्संगती भी।
इससे ही एक दिन पाऊँ मुक्ती, ''चन्दनामति'' मिले ऐसी शक्ती।
हँसते-हँसते बिता करके जीवन,
स्वर्ग सम सुख करें प्राप्त हरदम।।ऐसी.।।3।।

भजन

तर्ज - ज्योति से ज्योति जलाते चलो.....

विश्वशांति की ज्योति जली, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के, द्वारा अहिंसा की ज्योति जली।।टेक.।

धर्म और विज्ञान ने धरती-का सदैव श्रृंगार किया।
इक दूजे के पूरक बनकर, नामों को साकार किया।।
दोनों की जोड़ी है लगती भली, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।।1।।

कलियुग में विज्ञान ने अपना, धर्म से नाता तोड़ लिया।
अणु-बम एटम-बम निर्मित कर, मानवता को छोड़ दिया।।
इसीलिए गुरुओं की प्रेरणा मिली, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।।2।।

बिन लगाम का घोड़ा जैसे, आतंकी बन जाता है।
बिना धर्म के वैसे ही, विज्ञान भी धोखा खाता है।।
इसीलिए दोनों की जोड़ी बनी, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।।3।।

शांतिवर्ष यह दो हजार नौ, शांतिदूत बन आया है।
मैत्री का संदेश ''चंदना-मती'' सभी ने पाया है।।
गूंजे अहिंसा की जय हर गली, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।।4।।

भजन

तर्ज-माई रे माई.....

शांतिनाथ की जन्मभूमि से, गूँज उठी शहनाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्व धर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय।

दुनिया के सब देश चाहते, आपस में मैत्री हो।
फिर भी क्यों आतंक बढ़ा है, यह विचार गोष्ठी हो।।
धर्म अहिंसा ने ही देश को.....
धर्म अहिंसा ने ही देश को, आजादी दिलवाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय...।।1।।

जहाँ कभी प्रभु शांतिनाथ ने, छह खण्ड राज्य चलाया।
धर्मनीति अरु राजनीति का, सच्चा पाठ पढ़ाया।।
सत्य-न्याय की वही भूमि.....
सत्य-न्याय की वही भूमि, हस्तिनापुरी कहलाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय...।।2।।

भारत की सर्वोच्च आर्यिका-गणिनी ज्ञानमती माता।
राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने, जोड़ा उनसे नाता।।
तभी ''चंदनामती'' देश ने.....
तभी चंदनामती देश ने, नव उपलब्धी पाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परमधर्म की जय....।।3।।

शांति मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जगत्शान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

आज के मानव में कलियुग का रूप दिखाई देता है : काव्य रूपक

तर्ज-एक थी राजुल.....

आज के मानव में कलियुग का, रूप दिखाई देता है।
राम की धरती पर रावण का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।

कहते हैं माँ की ममता, बच्चे पर सदा बरसती है।
कोई कह नहीं सके कि वह, बच्चे की हत्या करती है।।
लेकिन आज की माँ में नागिन, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।1।।

सुना है कितना ही धन दे दो, किन्तु न प्राण कोई दे देगा।
क्योंकि प्राण के बदले मानव, दुनिया में क्या सुख देखेगा।।
लेकिन मानव बम में विष का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।2।।

देखो गौ माता बस तृण खा, मीठा दूध पिलाती है।
फिर भी कतलखाने में उन पर, छुरी चलाई जाती है।।
मानव में ही हत्यारों का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।3।।

खेत में खेती कर किसान, मेवा फल अन्न उगाता है।
कलियुग में नर अण्डा मछली, को कृषि कहकर खाता है।।
जिव्हा लोलुपता में उन्हें सुख चैन दिखाई देता है।।आज के.।।4।।

तप संयम अध्यातम का, निर्यात जहाँ से हुआ सदा।
आज माँस निर्यात वहाँ से, करता मानव कलियुग का।।
इस भौतिक संपति में हिंसक रूप दिखाई देता है।।आज के.।।5।

अपने शील से सीता ने जहाँ, नीर बनाया अग्नी को।
आज की नारी फिल्मों में, कर रही प्रदर्शित अंगों को।।
अब सीता में सूपनखा का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।6।।

मातपिता की विनय जहाँ पर, जन्मघूंटि से मिलती है।
आज वहाँ भी उनको अपनों, की प्रताड़ना मिलती है।।
इस कलियुग के रिश्तों में, अपमान दिखाई देता है।।आज के.।।7।।

कलियुग में भी सतयुग का दर्शन चाहो हो सकता है।
एक कहानी से देखो, युगपरिवर्तन हो सकता है।।
इन्सानी भावों में प्रभु का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।8।।

देखो इक राजा ने सुन्दर, बड़ा सरोवर बनवाया।
उसको दूध से भरने हेतू, उसने ढिंढोरा पिटवाया।।
सभी दूध डालें उसमें, आदेश सुनाई देता है।।आज के.।।9।।

राजाज्ञा पाकर जनता ने, अपने हर्ष को दरशाया।
सबके सपनों में अब मानो, क्षीर का सागर लहराया।।
लेकिन एक व्यक्ति के मन में, खोट दिखाई देता है।।आज के.।।10।।

सोचा उसने सभी दूध, डालें मैं तो जल डालूँगा।
पता किसी को नहीं लगेगा, चतुराई यदि कर लूँगा।।
रात्री में जल डाल के वह संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।11।।

कलियुग का अभिशाप यह देखो, सबके मन में भी आया।
पानी डाल के दूध सरोवर, को देखना सबने चाहा।।
इसीलिए पूरा सरवर, जल भरा दिखाई देता है।।आज के.।।12।।

चला देखने राजा खुश हो, दूध भरा सरवर अपना।
अपनी प्यारी प्रजा को लेकर, सोचा पूर्ण हुआ सपना।।
मात्र कल्पना करके वह, संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।13।।

राजा पहुँचा निकट सरोवर, हक्का बक्का हुआ तभी।
लाल आँख करके मंत्री से, बोला आज्ञा क्यों न पली।।
बेचारे मंत्री में डर का, भूत दिखाई देता है।।आज के.।।14।।

शीश झुका मंत्री बोला, राजन्! अब कलियुग आ ही गया।
कर न सकेंगे आप व मैं कुछ, मानो सतयुग चला गया।।
चिन्तायुत राजा-मंत्री में, क्रोध दिखाई देता है।।आज के.।।15।।

चिन्तन कर राजा ने प्रजा पर, प्रेमपूर्ण दृष्टि डाली।
इस कलियुग को एक बार, सतयुग में बदल देने वाली।।
मानो अब जनता में पुन; विश्वास दिखाई देता है।।आज के.।।16।।

बोल पड़े सब एक साथ, राजन्! इक दिन का अवसर दो।
सरवर क्या हम दूध का सागर, भर देंगे चिन्ता न करो।।
फिर सबके मुख पर अद्भुत संतोष दिखाई देता है।।आज के.।।17।।

अब देखो उस राज्य में दूध का, भरा समन्दर लहराया।
बड़े-बड़े कलशों में दूध ले, सारा गाँव उमड़ आया।।
राजा देख सरोवर को, संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।18।।

ढोल ढमाके बजे बहुत, राजा ने कहा यह सतयुग है।
अपनी करनी से कर सकते, हम कलियुग में सतयुग हैं।।
इसी धरा पर आज भी राम का राज दिखाई देता है।।आज के.।।19।।

दुनिया वालों देखो! मानव, स्वयं ही रूप बदलता है।
खुद को चतुर मान करके, कलियुग को दोषी कहता है।।
इसमें तो ईमान का केवल दोष दिखाई देता है।।आज के.।।20।।

बंधुओं! अब आप कलियुग में भी कहीं-कहीं दिखने वाले सतयुग की बात सुनेंगे-

आज के कलियुग में भी सतयुग रूप दिखाई देता है।
जिनवर की प्रतिमा में प्रभु का रूप दिखाई देता है।।टेक.।।

भारत भूमी साधु-साध्वियों, के विचरण से धन्य सदा।
जिनवर के लघुनंदन मुनिवर शांतिसिंधु का जन्म हुआ।।
आज के सन्तों में भी वैसा, रूप दिखाई देता है।। आज के.।।21।।

संत श्रृंखला में इक गणिनी, ज्ञानमती माताजी हैं।
जिनने इस कलियुग में भी, नारी शक्ती बतला दी है।।
तभी आज उनमें ब्राह्मी का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।22।।

दिल्ली में चौबिस कल्पद्रुम, मण्डल एक बार रचवाया।
भक्ती की गंगा में भक्तों, को अवगाहन करवाया।।
इन्हीं अनुष्ठानों से सुख सन्तोष दिखाई देता है।।आज के.।।23।।

अन्तर्राष्ट्री ऋषभदेव, निर्वाण महोत्सव करवाया।
प्रधानमंत्री के द्वारा, उसका उद्घाटन करवाया।।
इस उत्सव में व्यसनमुक्ति, उद्घोष दिखाई देता है।।आज के.।।24।।

तीर्थ हस्तिनापुरी अयोध्या, कुण्डलपुर उद्धार किया।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का जग भर में प्रचार किया।।
इसीलिए तीर्थों पर नूतन, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।25।।

टी.वी. के माध्यम से सब, घर-घर में सुनते गुरुवाणी।
निज जीवन निर्माण हेतु, जन-जन के लिए जो कल्याणी।।
गुरु भक्ती का अब जनता में, जोश दिखाई देता है।।आज के.।।26।।

ज्ञानमती माताजी ने अब, शांति वर्ष उद्घोष किया।
राष्ट्रपति प्रतिभा जी ने, उस ज्योति को उद्योत किया।।
तभी "चंदनामती" धरम का, शोर दिखाई देता है।।आज के.।।27।।

भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप से उद्घोषित

शांति वर्ष-2009 की वार्षिक रूपरेखा

भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 2885वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में आयोजित ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' का उद्घाटन 21 दिसम्बर 2008, रविवार को गणतंत्र भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस दो दिवसीय पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक एवं सम्मेलन के अवसर पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार एवं शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किये। गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्तमान युग की आवश्यकता पर किये गये अपने चिन्तन के आधार पर सन् 2009 का वर्ष ''शांतिवर्ष'' के रूप में मनाने हेतु अनेक प्रेरणा बिन्दु जैन समाज के लिए प्रदान किये हैं, जिन्हें देश-विदेश के जैन समुदाय द्वारा विभिन्न माध्यमों से

सम्पन्न कराने हेतु प्रान्तीय समितियाँ निर्धारित की गई हैं।

इस वर्ष के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं–

1. विश्वशांति अनुष्ठान

(1) 16 दिवसीय शांतिविधान–किसी भी माह में शुक्लपक्ष की एकम् से लेकर अगले मास की कृष्ण पक्ष की एकम् तक (आश्विन और मगसिर मास में 16 दिन का पक्ष है अतः पूर्णिमा तक या किसी भी मास में शुक्लपक्ष में 16 दिन तक)

(2) 8, 5 या 1-1 दिन के शांतिविधान–ये विधान प्रत्येक जैन समाज द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप से आयोजित किये जा सकते हैं।

(3) सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम आदि 8 दिवसीय बड़े विधान–अष्टान्हिका या दशलक्षण आदि पर्व के अवसर पर आयोजित होने वाले सभी बड़े महायज्ञ पूजन विधान इसी विश्वशांति अनुष्ठान में सम्मिलित किये जायेंगे।

(4) विश्वशांति मंत्र का जाप्य–

''ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः''।

इस मंत्र की 1-1 माला प्रतिदिन सभी नर-नारी करें तथा कम से कम 1 घंटे तक इस मंत्र का अथवा णमोकार मंत्र का या भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक उच्चारण करें तो जहाँ-जहाँ तक मंत्रोच्चारण की ध्वनि गूंजेगी, वहाँ-वहाँ पर पर्यावरण शुद्ध होकर शांति की स्थापना होगी।

2. विश्वशांति अहिंसा संगोष्ठी

विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं में, सामाजिक स्तर पर मंदिरों में सभा आदि स्थानों पर विभिन्न युवा संगठन, महिला संगठन आदि के माध्यम से एक-दो अथवा त्रिदिवसीय संगोष्ठियों का आयोजन करें ताकि जन-जन तक अहिंसा का संदेश पहुँचे और विश्व में शांति की स्थापना में जैनसमाज का महत्वपूर्ण योगदान हो सके। संगोष्ठी के लिए निम्न विषय निर्धारण किये जा सकते हैं–

(1) विश्वशांति में अहिंसा का योगदान
(2) भारत की आजादी में अहिंसा की भूमिका
(3) जैनधर्म में वर्णित अहिंसा की सूक्ष्म परिभाषा
(4) पर्यावरण संरक्षण हेतु अहिंसा की आवश्यकता
(5) विश्वशांति के लिए धार्मिक सद्भावना अपेक्षित है

(6) विश्वशांति के लिए नारियों की भूमिका
(7) विश्वशांति के लिए देश के युवकों की भूमिका
(8) लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या निषेध

नोट - ज्ञातव्य है कि इस ''शांति वर्ष-2009'' में अधिकतम अनुष्ठान-विधान, मंत्र जाप्य इत्यादि करने वाले महानुभाव अपने अनुष्ठानों की संख्या जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पते पर प्रेषित करें। उनके नाम सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका के माध्यम से प्रचारित किए जाएंगे।